OM - 19 - 2019 DELHI_Page 1 and 2 09/12/2019 12:19 PM Page 11

सम्पूर्ण प्राप्ति का आधार, परमात्मा का द्वार...

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

देखा जाये तो सारे कर्म क्षेत्र पर ऐसा तो एक भी मनुष्य नहीं है जो पिता, शिक्षक और गुरू, तीनों का ही कर्त्तव्य करे, क्योंकि मनुष्य आत्मा के साथ यह तीनों अविनाशी सम्बंध तो एक मुझ पारलौकिक सर्वोत्तम आत्मा ही के हैं। मनुष्य आत्माओं में तो वह बेहद का रूहानी ज्ञान ही नहीं है। और वह अखुट-अविनाशी सम्पत्ति भी नहीं है कि जिससे वह किसी को अविनाशी पवित्रता, शांति और सुख दे सके। तभी तो सब मनुष्य, लौकिक गुरू इत्यादि भी उसके लिए मुझसे ही प्रार्थना करते रहते हैं। क्योंकि सुख दाता, शांति दाता, त्रिलोकों का मालिक तो एक मैं ही हूँ।

'ईश्वरीय जन्म' द्वारा परमात्मा के साथ सम्पूर्ण सम्बंध जोड़ने से सम्पूर्ण प्राप्ति का गुह्य रहस्य परमात्मा ने स्वयं आकर हमें बताया है कि यूं तो अविनाशी आत्मा का मुझ अनादि-अविनाशी के साथ पिता-पुत्र का सम्बंध तो है ही, परंतु जैसे लौकिक पिता की सम्पत्ति उसके पास जिस्मानी जन्म लेने से अथवा उसकी गोद लेने से प्राप्त होती है, वैसे ही मुझ निराकार पिता की सम्पत्ति का अधिकार तब मिलता है जब मैं निराकार ईश्वर, साकार मनुष्य-तन धारण करके साकार मनुष्य आत्माओं को मुख द्वारा ईश्वरीय जन्म देता हूँ। अर्थात् ज्ञान द्वारा शूद्र से ब्राह्मण बनाता हूँ। अथवा दैवी धर्म को अपनाने वाले बच्चे गोद में लेता हूँ। हे वत्सों, कहने को तो सब मनुष्य मुझे पिता कहते हैं, परंतु उन्होंने मुझ अविनाशी पिता को साकार माध्यम ब्रह्मा के मुख कमल से 'ईश्वरीय जन्म' तो यथार्थ में लिया ही नहीं है। और ना ही उन्होंने लौकिक पिता-शिक्षक-गुरू का तथा माया के संग का मन से सन्यास कर मुझ पिता की गोद ही ली है। इस कारण ही उनके जीवन में न पवित्रता, सुख और शांति की सम्पत्ति देखने में आती और ना ही उन्हें मेरा यथार्थ परिचय है। इसीलिए वास्तव में उन्हें यह कहना ही नहीं शोभता कि वो मुझ ज्ञान सागर, परम पवित्र, परमपिता परमात्मा की संतान हैं और ना ही मैं ही कोई वास्तव में उन्हें अपने सगे बच्चे कह सकता हूँ।

जैसे किसी मनुष्य आत्मा को उससे जन्म लेने वाले और सम्पत्ति पाने वाले अथवा उसकी गोद लेने वाले बच्चे ही पिता कह सकते हैं, वैसे ही जो मनुष्य किसी से ज्ञान लेकर पद प्राप्त करता है, वो ही ज्ञान देने वाले को यथार्थ रूप में 'गुरू' कह सकता है। ऐसे ही मैं ज्ञान-सागर, बेहद का मालिक, त्रिकालदर्शी परमात्मा भी धर्म ग्लानि के समय जब धर्म पिता आदिदेव ब्रह्मा के साकार मनुष्य तन में, अपने दूर-देश से आकर, मुझ द्वारा रचे हुए अविनाशी ज्ञान-यज्ञ रूपी सर्वोत्तम पाठशाला में, डायरेक्ट ही तुम बच्चों को सहज ज्ञान और सहज राजयोग की सर्वोत्तम पढ़ाई पढ़ाता हूँ, तब तुम ही मुझे अध्यापक अथवा गुरू कहने के अधिकारी बनते हो। जबकि दूसरे मनुष्यों को मेरा परिचय ही नहीं, उन्होंने मुझ द्वारा सम्मुख, सृष्टि के आदि, मध्य और अंत का, सभी धर्मों के आवागमन का और मुक्ति-जीवनमुक्ति का ज्ञान ही प्राप्त नहीं किया और मुझसे प्राप्त होने वाले सर्वोत्तम पूज्य जीवन-मुक्त देवता पद का तथा मुक्तिधाम का साक्षात्कार ही नहीं किया तो वह मुझे 'गुरू' कह ही कैसे सकते हैं? यदि मनुष्य मात्र इस गुह्य परंतु सहज युक्ति को समझ जायें कि मैं अव्यक्त धाम अर्थात् परलोक का निवासी इस व्यक्त सृष्टि में आकर ब्रह्मा के मानवी तन में अध्यापक और गुरू का कर्त्तव्य करता हूँ और कल्प-कल्प सहज ज्ञान तथा सहज योग से एक मैं ही मुक्ति और जीवनमुक्ति देने वाला हूँ तो सब कोई मुझ एक पारलौकिक अध्यापक तथा गुरू से सम्बंध जोड़, अनमोल अविनाशी ज्ञान धन का अखुट खज़ाना प्राप्त कर मालामाल हो जायेंगे। क्योंकि मेरे ही विचित्र ज्ञान से मनुष्य से देवता, मुहताज से सिरताज, विकारी से निर्विकारी, अशांत से सम्पूर्ण शांत, रोगी से सदा निरोगी, शूद्र से ब्राह्मण बनना सम्भव है। तभी तो लोग मुझसे ही से यह सब वर मांगते रहते हैं। परंतु जब मैं उनकी पुकार सुनकर, ज्ञान द्वारा एक ही साथ उन्हें यह सभी वरदान देने आता हूँ तो मुझ साधारण तन-धारी को कोटों में कोई विरला परम-भाग्यशाली ही, मुझ द्वारा पहचान, सम्पूर्ण प्राप्ति के लिए यह पुरुषार्थ करता है।

भगवान को कहते हैं, 'त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव...' यह श्लोक अधिकतर सभी को पता है। वे जानते हैं कि हमारा सम्बंध ईश्वर से मात-पिता और बच्चे का है। एक तरफ हम भगवान को कहते हैं कि वो शांति का सागर है, प्रेम का सागर है, सर्व गुणों का भण्डार है, सुख का सागर है, वो हमारा पिता है और हम उसके बच्चे हैं। तो जो उनका है वो बच्चों का ही हुआ ना! फिर आज हम शांति, प्रेम, खुशी, समृद्धि के लिए भटक क्यों रहे हैं? हमारे पास वो सम्पन्नता क्यों नहीं है? हमारा सम्बंध उनसे पिता-पुत्र का ही है ना, फिर भी हम सुख, शांति, प्रेम से वंचित क्यों? या पूर्ण प्राप्ति क्यों नहीं? अगर ये प्राप्ति होती है तो कब होती है, कैसे होती है? उसकी विधि-विधान क्या है? इस बारे में हम आज समझते हैं।

हर एक विद्या से कोई न कोई पद तो प्राप्त होता ही है। अब, जैसे व्यवहार में जो जितनी ऊँची विद्या को जहाँ तक, अथवा जितने परिश्रम से प्राप्त करता है, वह उतना ही ऊँचा पद पाता है। वैसे ही मुझ ज्ञान सागर, सर्व महान, अविनाशी गुरू से भी, जो मेरे सर्वोत्तम, अविनाशी ज्ञान को जितना धारण करता है, वह उतना ही ऊँचा पद पाता है अर्थात् राजाओं का भी राजा, नर से श्री नारायण, नारी से श्री लक्ष्मी का पूजनीय पद पाता है। अतः आपको बात ये समझ में आ ही गई होगी कि परमात्मा के साथ जुड़ने के विधि-विधान में अंतर कहाँ है। उसे सही रूप में न जानना, पहचानना और सम्बंध स्थापित न होने के कारण हमें जो प्राप्ति होनी चाहिए वो नहीं होती। आप इस सम्बंध में अपने आप से, शांति से बैठकर संवाद करें और समझने की कोशिश करें कि मैं असंतुष्ट या अप्राप्त क्यों हूँ? आप इसे बार-बार पढ़कर अपने और परमात्मा के बीच के सम्बंध को प्रगाढ़ बनायें और अविनाशी सुख, शांति, पवित्रता, समृद्धि को प्राप्त करें। ऐसी हमारी शुभ-कामनायें हैं, शुभ-भावनायें हैं। बस, अपने से संवाद स्थापित करने वाला ही परमात्मा से सम्बंध स्थापित कर पायेगा, ऐसा हमें सम्पूर्ण विश्वास है।

आलस्य मानव का.... - पेज 3 का शेष

रक्तचाप और यहां तक कि रक्त की भौतिक और रासायनिक संरचना में परिवर्तन हो जाता है। खेलकूद एवं व्यायाम से कुछ समय बाद हृदय की धड़कनों में संतुलन आ जाता है। फेफड़ों की क्षमता में वृद्धि होती है और परिणाम स्वरूप शरीर में अधिक ऑक्सीज़न जाती है। सही एवं शरीर के अनुसार संतुलित खेलकूद एवं व्यायाम से सांसें व्यवस्थित हो जाती हैं। कुछ समय तक व्यायाम करने से शरीर भोजन का सही उपयोग करता है तथा व्यायाम या खेलकूद से... क्योंकि ऑक्सीज़न समस्त मांस-तंतुओं में अच्छी तरह पहुंचती है, अतः आंतरिक ग्रंथियों की गतिविधि बेहतर हो जाती हैं।

वाजपुर-उत्तराखण्ड। विश्व शान्ति और सद्भावना के लिए कैंडल मार्च करते हुए ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

झालरापाटन-राज.। 'दीपावली स्नेह मिलन एवं नेत्र चिकित्सा शिविर' के दौरान मंचासीन हैं नगरपालिका अध्यक्ष अनिल पोरवाल, नगरपालिका आयुक्त महावीर सिंह सिसोदिया, वृद्धाश्रम के अध्यक्ष मोहन लाल सोनी, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष राजेन्द्र गोयल, पार्षद बबीता सेठी, यशवर्धन बाकलीवाल, राजकुमार जैन, कवि साहित्यकार भारत विकास परिषद् के सदस्य कविम जैन तथा ब्र.कु. मीना।

अरेराजधाम-विहार। पूर्वी चम्पारण जिला स्वतंत्रता सेनानी एवं उत्तराधिकारी संगठन के अध्यक्ष किशोर पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीना। साथ हैं कौशल किशोर पाण्डेय, गांधी भक्त तारकेश्वर प्रसाद तथा किशोरी प्रसाद।

खोरधा-ओडिशा। जिला लोक उत्सव मंच पर पंचायती राज और पेयजल,कानून, आवास व शहरी विकास राज्यमंत्री प्रताप जेना को आध्यात्मिक पत्रिका-ज्ञान दर्पण भेंट करते हुए ब्र.कु. जयकृष्ण।

दिल्ली-पीतमपुरा। सेवाकेन्द्र के 30वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित 'एक शाम प्रभु के नाम' कार्यक्रम में उपस्थित हैं लॉरेल स्कूल के डायरेक्टर सुरेश भाटिया, झूलेलाल मंदिर के अध्यक्ष चन्दीराम चावला, गायक ब्र.कु. युगरत्न, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रभा, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. उषा तथा ब्र.कु. सुनीता।

छर्रा-उ.प्र.। पौधारोपण करते हुए मंडलायुक्त अजयदीप सिंह, अपर आयुक्त डॉ. कंचन शरण, ब्र.कु. रेखा तथा अन्य।

आगरा-सिकन्दरा। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा चलाये जा रहे 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत-अखिल भारतीय प्रदर्शनी बस अभियान' के स्वागत में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पार्षद सुषमा जैन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. मधु तथा अभियान यात्री।

शिवली-कानपुर देहात(उ.प्र.)। 'विश्वकर्मा सम्मेलन' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. कीर्ति,मा.आबू, चेयरमैन अवधेश शुक्ला, थाना निरीक्षक भूपेन्द्र सिंह राठी, ब्र.कु. बिमलेश तथा ब्र.कु. प्रीति।

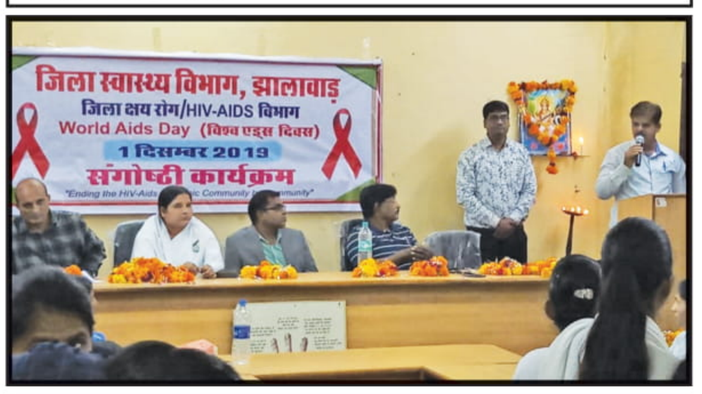

झालावाड़-राज.। विश्व एड्स दिवस पर सी.एम.एच.ओ. ऑफिस में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं डॉ. सुनील विजय,प्रोफेसर,टी.बी. एंड चेस्ट विशेषज्ञ, डॉ. आर.डी. माथुर,असिस्टेंट प्रोफेसर,टी.बी. एंड चेस्ट विशेषज्ञ, डॉ. पंकज,कमलेश नर्सिंग ट्यूटर, डॉ. सैयद,क्षयरोग विशेषज्ञ तथा ब्र.कु. नेहा।